संसद के केन्द्रीय कक्ष में भारत रत्न बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर जी की जयंती पर आयोजित पुष्पांजलि कार्यक्रम में माननीय अध्यक्ष जी का सम्बोधन

युग पुरुष, भारत रत्न, बाबा भीमराव अंबेडकर जी को मैं नमन करता हूं। आज हम सब ऐसे युग पुरुष, जिन्होंने अपनी ज्ञान से, अपने अनुभव से, अपनी आंतरिक चेतना से इस देश में एक ऐसा संविधान दिया, जो आज हमारा मार्गदर्शक है।

मुझे खुशी है कि आप सब लोग अलग-अलग राज्यों से आने वाले मेरे युवा साथी, जो स्कूल एवं कॉलेज में हैं, इसी केंद्रीय कक्ष में बाबा साहेब अंबेडकर जी ने संविधान सभा के रूप में नेतृत्व किया, एक लंबी चर्चा की, संवाद किया और भारत का संविधान बनाया।

आप सब के लिए यह गौरव का क्षण है। यही केंद्रीय कक्ष भारत की आजादी का साक्षी रहा, जिसने भारत में कई कानून दिये। लोगों के सामाजिक एवं आर्थिक जीवन में परिवर्तन करने में इस केंद्रीय कक्ष की बहुत बड़ी भूमिका है।

मैं भारत के सामर्थ्यवान, चिंतनशील नौजवानों को देख रहा हूं, जिन्होंने बाबा साहेब के बारे में अपने विचार रखे हैं, उनके जीवन दर्शन के बारे में विचार रखे हैं।

बाबासाहेब ने उस समय की विपरीत परिस्थितियों में भी अपने जीवन की अभावों और कठिनाइयों में दृढ़ संकल्प, एक आत्मविश्वास के साथ सर्वोत्तम शिक्षा प्राप्त की। बाबा साहब का एक ऐसा व्यक्तित्व है, जो आज भी हम सभी को प्रेरणा देता है।

मैं इन नौजवानों के विचारों को सुन रहा था, जो अलग-अलग राज्यों से आए हैं, जो अलग-अलग भाषाओं में अपने विचार व्यक्त कर रहे थे। भारत की जितनी विविधताएं, संस्कृतियां हैं, उनकी झलक मैं यहां पर देख रहा हूं। विविधता और संस्कृति के अंदर बाबा साहब के विचार हैं, जिन्होंने भारत को एक करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

हमारे संविधान में सामाजिक न्याय का जो सिद्धांत है, समानता और सबको साथ लेने वाला सिद्धांत बाबा साहेब ने प्रतिपादित किया। उस समय वंचित, पिछड़े लोगों को उन्होंने आगे लाने का प्रयास किया और सामाजिक न्याय के सिद्धांत पर आज भारत आजादी के 75 वर्षों बाद नए कीर्तिमान हासिल कर रहा है। दुनिया में सबसे बड़ा संविधान, सबसे बड़ी डेमोक्रेसी, डेमोग्राफी हमारे देश की है।

हमारी आजादी के बाद दुनिया को लग रहा था कि विविधताओं से भरा इतना बड़ा देश किस तरह से एक होगा, लेकिन हमारे संविधान ने हमें जोड़कर रखा। यह ताकत, सामर्थ्य उस संविधान में है, संविधान

देने वाले महर्षियों के विचारों में है। भारत विविधताओं और विभिन्न संस्कृतियों की ताकत के कारण ही बड़ा बना। दुनिया में कोई ऐसा संविधान नहीं है, जिसने आजादी के पहले दिन सबको समान मताधिकार दिया हो।

हमारे संविधान ने अपने धर्म को स्वेच्छा से मानने और अभिव्यक्ति का अधिकार दिया। व्यक्ति की अभिव्यक्ति, सामाजिक न्याय से लेकर तमाम चीजें इसी केंद्रीय कक्ष में बाबा साहेब ने संविधान सभा में हमें दी हैं और जो विचार मेरे नौजवानों ने यहां रखे हैं, बाबा साहेब के जीवन-दर्शन के बारे में जो बातें कही हैं, वे पूरे देश के नौजवानों को नई ऊर्जा और नया सामर्थ्य देंगी।

हम इसीलिए कहते हैं कि हमारी विरासत, हमारा अतीत हमें प्रेरणा देता है। हम हमारी विरासत, अतीत को याद करके नए भारत के निर्माण की ओर बढ़ रहे हैं और नए भारत के निर्माण के लिए सबसे बड़ी भूमिका मेरे भारत के नौजवानों की है, जो सामर्थ्यवान हैं और बौद्धिक क्षमता से युक्त हैं, जिनमें सोचने, चिंतन, विचार, नवाचार, अनुसंधान करने की शक्ति और सामर्थ्य है। जो आधुनिक भारत में टेक्नोलॉजी के साथ आगे बढ़ रहे हैं तथा अपने अतीत, विरासत और अपनी संस्कृति को याद करके नए भारत के निर्माण की ओर बढ़ रहे हैं।

मैं आप सबको साधुवाद देता हूं। आपने जो विचार रखे, मुझे लगता है कि आप भावी सामाजिक, राजनीतिक नेता हैं, जो भविष्य में नेतृत्व करेंगे। जो आपके विचारों को यहां अथवा लोक सभा टीवी के माध्यम से सुन रहा होगा, उनको लग रहा होगा कि भारत के नौजवान कितने सामर्थ्यवान हैं और उनमें कितना चिंतन है, किस तरीके से वे बाबा साहेब के विचारों को रख रहे हैं।

हम सब यहां से बाबा साहेब के विचारों को लेकर जाएं, उनके चिंतन को लेकर जाएं। उन्होंने शिक्षा, सामाजिक न्याय आदि अलग-अलग क्षेत्रों से संबंधित जिन विभिन्न सामाजिक विचारों को रखा, उन विचारों को लेकर जाएं और बाबा साहेब के सपनों का भारत बनाने के लिए कृत संकल्प होकर देशहित में काम करें। आप सभी को बहुत-बहुत शुभकामनाएं और बधाई।

———